इकाई 4 -पशुपालन

- **पशुधन विकास की आवश्यकताएं**
- **पशुधन विकास की आवश्यकता**
- **पशुधन विकास के मूलभूत तत्व**
- **प्रजनन, पोषण, संरक्षण**
- **पशुधन विकास चार मूलभूत तत्वों पर निर्भर है - नस्ल, आहार, सामान्य प्रबन्ध, स्वास्थ्य एवं बीमारियाँ**

आदिकाल में मनुष्य पेट भरने के लिए मांस के रूप में भोजन,तन ढकने के लिए वस्त्र के रूप में खाल जानवरों से प्राप्त करता था। सभ्यता के विकास के साथ-साथ मनुष्य ने कुछ जानवरों को अपनी आवश्यकताआें की पूर्ति के लिए पालना शुरू किया जैसे-खेतों की सुरक्षा के लिए कुत्ता,दूध,ऊन,मांस,अण्डा आदि के लिए विभिन्न पशु पक्षी। आज मनुष्य उन्हें आश्रय प्रदान कर रहा हैं,पर्यावरण की विभिन्नताआें से उनका बचाव एवं उनमें उच्च गुणों का विकास करते हुए पशुधन के रूप में पालन पोषण कर रहा हैं। पशुधन में पालतू पशु जैसे-गाय,भैंस, भेंड़,बकरी,ऊँट, खरगोश तथा मुर्गी आदि सम्मिलित हैं।

पशुधन विकास की आवश्यकताएं

संसार में सबसे ज्यादा पशु भारत में हैं लेकिन दूध के औसत उत्पादन में हम डेनमार्क, स्विट्जरलैंड,न्यूजीलैंड, संयुक्त राज्य अमेरिका आदि देशों से बहुत पीछे हैं ।ऐसा क्यों हैं ? क्योंकि हम पशुधन उत्पादन के बारे में जागरूक नहीं हैं। जिसका अर्थ होता हैं पशुओं की देखभाल तथा उनके उपयोग पशुओं की देखभाल में मुख्य रूप से पशु- प्रजनन,पोषण, आवास तथा स्वास्थ्य रक्षा सम्बन्धी देखभाल सम्मिलित हैं ।पशुओं का उपयोग हमारे

दैनिक जीवन में दूध, मांस आदि खाद्य- पदार्थ के उत्पादन के साथ -साथ जैविक खाद, चमड़ा, गोबर गैस आदि ऊर्जा स्रोत के रूप में सम्मिलित हैं।

1) **दूध की प्राप्ति** - हम सभी दूध पीते हैं दूध बच्चों के लिए सम्पूर्ण भोजन हैं । यह दूध हमें अपनी माँ के अलावा पशुओं से भी प्राप्त होता हैं । दूध ऐसा पेय पदार्थ हैं जिसमें प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, खनिज लवण तथा विटामिन आदि आवश्यक तत्त्व पाये जाते हैं। गाय का दूध बच्चों के लिए सर्वोत्तम होता हैं । गाय का दूध पीला क्यों होता हैं ? गाय का दूध और घी पीला होता हैं क्योंकि गाय के दूध में **कैरोटीन** होती हैं और यही कैरोटीन **विटामिन `ए'** में बदलती हैं ।पीलापन इसी कैरोटीन की उपस्थिति के कारण होता हैं ।

2) **कृषि में पशुओं का उपयोग** - हम दैनिक जीवन में देखते हैं कि हमारे कृषि कार्यो में अधिकतर पशु ही काम आते हैं । खेत की जुताई, बुवाई, मड़ाई, ढुलाई, सिंचाई आदि सभी कार्य पशुओं द्वारा ही किये जाते हैं। कृषि कार्यो में बैल, भैंस, ऊँट आदि का उपयोग ज्यादा होता हैं । हमारे देश में औसत जोत का आकार छोटा हैं इस कारण ट्रैक्टर आदि की संख्या अत्यन्त कम हैं ।

3) **जैविक खाद की प्राप्ति** - आपने खेत में केचुआ देखा हैं। केचुआ रासायनिक खाद के प्रयोग से मर जाता हैं। केचुए को प्रकृति का हलवाहा कहते हैं। जीवांश खाद,पशु के गोबर तथा मूत्र से बनती हैं । यह खाद मिट्टी में जीवांश की मात्रा बढ़ाती हैं, जिससे फसलों का उत्पादन अच्छा होता हैं । हमारे पास जितने अधिक पशु होंगे उतनी ही अधिक जीवांश खाद हमें प्राप्त होगी । कम्पोस्ट खाद बनाने में पशुओं के गोबर और मूत्र का प्रयोग किया जाता हैं ।

4) **अर्थव्यवस्था में योगदान** - हमको अपनी दैनिक आवश्यकताआें की पूर्ति के लिए धन की आवश्यकता पड़ती हैं । गाँवों में अधिकांश किसान डेरी के रूप में पशुपालन करते हैं तथा अपनी आवश्यकता से बचे दूध को बेचकर चिकित्सा,शिक्षा,वस्त्र आदि दैनिक आवश्यकताआें के लिए धन प्राप्त करते हैं। जिस स्वेटर से आप जाड़े में अपना शरीर गरम रखते हैं वह भेड़ के ऊन से बना होता हैं। पशुओं के चमड़े से जैकेट,जूते,टोपी तथा थैले आदि बनते हैं ।

पशुपालन तथा डेरी उद्योग से देश के बहुत लोगों को रोजगार उपलब्ध हो रहा हैं ।आजकल पशुपालन से रोजगार सृजन की अधिक संभावनायें हैं जिससे बेरोजगारी की समस्या को दूर किया जा सकता हैं।

पशुधन विकास के मूलभूत तत्व

1. नस्ल - प्रजनन, वरण व छँटनी का परिणाम ही नस्ल सुधार है।

प्रजनन

नर व मादा का सन्तानोत्पत्ति हेतु पारस्परिक सहवास 'प्रजनन' कहलाता है। प्रजनन हेतु अच्छे सांड़ व गायों का वरण किया जाता है। पशुपालन में वरण से तात्पर्य है उत्तम पशुओं का चुनाव तथा छँटनी का तात्पर्य है रोगग्रस्त एवं कम उत्पादन वाले पशुओं को अलग कर देना। वरण प्रजनन की आधार शिला है। पशु प्रजनन में शीघ्र उन्नति प्राप्त करने के लिए यह सर्वश्रेष्ठ साधन है। प्रजनन के दृष्टिकोण से वरण का अर्थ अगली पीढ़ी के लिए उत्तम माता - पिता का चुनाव होता है। केवल वरण अथवा प्रजनन पद्धति से पशुओं का सुधार नहीं हो सकता बल्कि इन दोनों के तर्क संगत एवं सम्मिलित उपयोग द्वारा ही पशुधन का उत्थान सम्भव है।

प्रजनन के उद्देश्य

i) पशु शीघ्र युवा हों ।

ii) उनमें रोग से बचाव की शक्ति हो।

iii) वे नियमित बच्चे देने वाले हों ।

iv) वे अधिक उत्पादक हों ।

v) उनके दूध में वसा अधिक हो।

vi) वे सभी प्रकार के वातावरण में रह सकें।

vii) भारवाहन व कृषि कार्यो हेतु उपयुक्त हों ।

प्रजनन की विधियाँ- प्रजनन की विधियों से तात्पर्य उन प्रविधियों(Techniques)से हैं,जिनके द्वारा सन्तानोत्पत्ति के लिए नर पशु का वीर्य मादा के जनन अंगों में पहुंचाया जाता हैं ।पशु प्रजनन की दो विधियाँ हैं -

क) **प्राकृतिक प्रजनन** - नर व मादा पशु के परिपक्व होने पर प्रकृति उनमें चेतना उत्पन्न करती हैं कि वे आपस में सहवास करके सन्तानोत्पत्ति करें । इस विधि में साँड़, गाय के मदकाल में सीधा सहवास करता हैं ।

ख) **कृत्रिम प्रजनन** - कृत्रिम प्रजनन को कृत्रिम गर्भाधान भी कहते हैं। कृत्रिम तरीके से स्वस्थ साँड़ का वीर्य,गाय के जननांग में यन्त्रों की सहायता से उचित समय पर डालना, कृत्रिम गर्भाधन कहलाता हैं।कृत्रिम गर्भाधान की सुविधा सभी पशु गर्भाधान केन्द्रों एवं चिकित्सालयों पर उपलब्ध होती हैं ।

विशेष -

1)परखनली शिशु के बारे में तो हमने सुना ही हैं । ठीक इसी प्रकार पशुओं में भी भ्रूण प्रत्यारोपण तकनीक विकसित की गयी हैं। इसकी सहायता से एक वर्ष में ही उत्तम नस्ल के एक पशु के शुक्राणुओं को उसी जति की 10-12 मादा पशुओं में अलग-अलग प्रत्यारोपित करके 10-12 बच्चे प्राप्त किये जा सकते हैं ।

2)क्लोनिंग- जेनेटिक इन्जीनियरिंग की सहायता से पशु की एक कोशिका से ठीक उसी प्रकार का दूसरा पशु कृत्रिम रूप से तैयार करने की विधा को क्लोनिंग कहते हैं।

2) **पोषण** - हम सभी इस तथ्य से अवगत हैं कि सभी जीवधरियों को अपना जीवन सुचारु रूप से चलाने के लिए भोजन ग्रहण करना आवश्यक हैं ।पोषक तत्त्वों की आपूर्ति हेतु भोजन ग्रहण करना पोषण कहलाता हैं । मनुष्य अपनी पोषण आवश्यकताआें की पूर्ति मुख्यत: अनाज, दाल व तिलहन की फसलों,सब्जियों,फलों,दूध,अण्डे,मांस,एवं मछली इत्यदि से करता हैं । ठीक इसी प्रकार हमारे पशुधन को भी उचित एवं संतुलित पोषण देना

आवश्यक हैं जिससे हमारे पालतू पशुओं की उत्पादन क्षमता एवं कार्य क्षमता बनी रहे । भोजन में मुख्य पोषक तत्व **प्रोटीन, वसा, शक्करा, खनिज लवण, विटामिन तथा जल** हैं।

कृषि के मुख्य उत्पादों जैसे गेंहूँ,धान,जौ,मक्का,चना,मटर,अरहर,मूगँ,उर्द,मूगँफली,सोयाबीन,सरसों आदि का उपभोग तो मनुष्य स्वयं कर लेता हैं किन्तु कृषि के उप उत्पादों जैसे- भूसा, पुआल, खली, चूनी, चोकर, छिलका आदि का उपभोग स्वयं नहीं करता हैं। इन बचे हुए उप उत्पादों का भी बेहतर उपयोग आवश्यक हैं अन्यथा पर्यावरणीय सन्तुलन बिगड़ जायेगा । इन पदार्थ का उपयोग हम मुख्यत: पशुओं को खिलाने के लिए करते हैं । इस प्रकार पशु हमारे पर्यावरण को बनाये रखने में मदद करता हैं । पशुओं को 24 (दिन व रात) घंटे के अन्तर्गत दिये जाने वाला दाना,चारा व पानी की कुल मात्रा को पशु आहार (राशन) कहते हैं । आहार के मुख्य घटक निम्नालिखित हैं -

जीवन निर्वाह आहार - यदि पशु से कोई कार्य न लिया जाय और वह उत्पादन भी न कर रहा हो तब भी उसे अपनी जैविक क्रियाआें (श्वसन, पाचन, ऊष्मा, संतुलन आदि) के लिए आहार की आवश्यकता होती हैं। इस स्थिति में पशु को 24 घंटे में दी जाने वाली चारे, पानी व दाने की मात्रा को जीवन निर्वाह आहार कहते हैं ।

उत्पाद आहार - हम पशुओं से उत्पादों के रूप में दूध, मांस, अण्डा, ऊन, आदि महत्वपूर्ण पदार्थ प्राप्त करते हैं । पशुओं को वृद्धि एवं उत्पादन के उद्देश्य से जीवन निर्वाह आहार के

अतिरिक्त जो खिलाते हैं उसे उत्पादन आहार कहते हैं । पशुओं से उत्पादन कार्य में हुई उर्जा क्षति की हम इस आहार द्वारा पूर्ति करते हैं । पशुओं से अधिक मात्रा तथा अच्छी गुणवत्ता का उत्पाद प्राप्त करने के लिए उत्पादन आहार की मात्रा एवं गुणवत्ता अच्छी होनी चाहिए ।

कार्य आधरित आहार - हम सभी ने अपने आस - पास के खेतों की जुताई, पाटा लगाने व सामानों की ढुलाई करते हुए पशुओं को देखा हैं,सोचिए कि कार्य करने में कितनी अधिक ऊर्जा का ह्रास होता हैं जिसकी पूर्ति हेतु दिए जाने वाले आहार की कमी से पशुओं की कार्यशक्ति धीरे-धीरे क्षीण हो जाती हैं तत्पश्चात् पशु कमजोर हो जाता हैं ।

संतुलित आहार - जिस आहार में सभी पोषक तत्व (प्रोटीन, वसा, शक्करा, विटामिन, जल एवं खनिज लवण) उचित अनुपात में, उपयुक्त मात्रा में मौजूद हों उसे संतुलित आहार कहते हैं। यह आहार सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि इससे पशु की क्षमता का लाभ प्राप्त किया जा सकता हैं ।

आहार परिकलन - पशुओं को कम खिलाने से वे कमजोर हो जाते हैं तथा उत्पादन घट जाता हैं । पशुओं को अधिक खिलाने से पशु बीमार हो जाते हैं । तब उनकी पूरी क्षमता का उपयोग नहींहो सकेगा । अत: पशुओं को उनकी आवश्यकतानुसार ही खिलाना चाहिए तथा उनके शरीर भार के अनुसार शुष्क पदार्थ देना चाहिए ।

पशु	शुल्क पदार्थ की मात्रा (किग्रा) प्रति 100 किग्रा शरीर भार
सूखी गाय (दूध न देने की अवस्था)	2.5
दूध देने वाली गाय (500 किग्रा से कम)	3.0
दूध देने वाली गाय (500 किग्रा से अधिक)	3.5
बैल	3.5
साँड	3.5
भैंस	3.5

जीवन निर्वाह हेतु निम्नवत् दाना देना चाहिए -

गाय- 1 से 2 किग्रा

बैल- 2किग्रा

भैंस- 2 किग्रा

साँड़- 2 किग्रा

दूध उत्पादन हेतु निम्नवत् दाना देना चाहिए -

गाय- एक किग्रा अतिरिक्त दाना प्रति 3 किग्रा दूध पर

भैंस- एक किग्रा अतिरिक्त दाना प्रति 2. 5 किग्रा दूध पर

औसत कार्य -1.5 किग्रा अतिरिक्त दाना प्रतिदिन

भारी कार्य - 2.0 किग्रा अतिरिक्त दाना प्रतिदिन

कुल आहार में 2 /3 भाग चारा व 1/3 भाग दाने का मिश्रण रखना चाहिए। यही अनुपात सूखे चारे व हरे चारे में रखते हैं । खाने का नमक 40 ग्राम तथा खनिज लवण प्रतिदिन 50 ग्राम देना चाहिए।

चित्र 4.1 चारा मशीन

संरक्षण -

पालतू पशुओं के विभिन्न नस्लों के बारे में हम जान चुके हैं। पशुपालक जब अपने किसी शुद्ध नस्ल की मादा पशु का प्रजनन किसी दूसरे नस्ल के नर से कराता है तो संकर नस्ल उत्पन्न हो जाती है। यदि इस संकर संतति की मादा को अगली पीढ़ियों की संतानोत्पत्ति

हेतु भिन्न भिन्न नस्ल के नर द्वारा प्रजनन कराया जाता है तो उत्पन्न संततियों में किसी भी शुद्ध नस्ल की विशेषतायें नहीं बच पाती हैं अथवा यह भी कहा जा सकता है कि उनमें कई नस्लों की विशेषताएँ आ जाती है। ऐसे पशुओं को देशी पशु कहा जाता है। अनियोजित एवं अनियन्त्रित प्रजनन के कारण देश में देशी पशुओं की संख्या में इतनी अधिक वृद्धि हुई कि शुद्ध नस्ल के पशुओं में भारी कमी हो गयी है। नियोजित एवं नियन्त्रित प्रजनन की सहायता से विभिन्न नस्ल के पशुओं की संख्या पर्याप्त बनाये रखने को पशु संरक्षण कहा जाता है। पशु संरक्षण हेतु प्रजनन की क्रमोन्नति पद्धति का उपयोग किया जाता है। इस पद्धति में देशी मादा को शुद्ध नस्ल के नर से प्रजनन कराया जाता है फिर अगली छः पीढ़ियों तक मादा संततियों को उसी नर से या उसी नस्ल के शुद्ध नर से प्रजनन कराने पर शुद्ध नस्ल की संतति प्राप्त हो जाती है।

जब किसी नस्ल के पशुओं की संख्या बीस हजार से कम हो जाती है तो उसे संकटापन्न नस्ल कहा जाता है तथा यदि उसी नस्ल के मादा पशुओं की संख्या पांच हजार तक ही रह जाती है तो उस नस्ल को संकटाग्रस्त नस्ल कहा जाता है।

3) पशु प्रबन्धन

अ) पशु स्वास्थ्य- स्वस्थ होना सबके लिए जरूरी हैं।स्वस्थ रहने के लिए हम कुछ बातों का ध्यान रखते हैं।इसी तरह हमें पशु के स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए।स्वच्छ तथा स्वास्थ्यकर दूध पाने के लिए पशु का स्वस्थ एवं निरोग होना आवश्यक हैं।पशु के लिए ताजे पौष्टिक चारे की व्यवस्था करनी चाहिए। पशुशाला हवादार होनी चाहिए तथा उसकी नियमित सफ़ाई करनी चाहिए।पशुओं को बीमरियों से बचाव हेतु टीके (Vaccine)लगवाना चाहिए ।

ब) पशु की सफ़ाई- हम प्रतिदिन अपने शरीर की सफ़ाई का कितना ध्यान रखते हैं ?यदि हम प्रतिदिन स्वच्छता का ध्यान न रखें, तो हमें कई तरह की बीमारियाँ हो सकती हैं। इसी तरह हमें अपने पशुओं का भी ध्यान रखना चाहिए। दूध दुहने के पहले हमें पशु के शरीर की सफ़ाई करनी चाहिए अन्यथा पशु के शरीर पर लगा गोबर,धूल आदि गन्दगी दूध में गिरकर उसे प्रदूषित कर देते हैं।

पशु को नियमित खुरेरा करना बहुत लाभदायक रहता हैं। दूध दुहने से पूर्व दुधारू पशु के पिछले भाग अयन और थन को धोकर गीले कपड़े से पोंछ देना चाहिए। पशु को जूँ किलनी, चीलर आदि न पड़ने पाये इसका ध्यान रखना चाहिए ।

स) दुग्धशाला की सफ़ाई- जिस प्रकार हम अपने घर को साफ -सुथरा बनाये रखने हेतु झाड़ू लगाते हैं,कच्ची फर्श पर लिपाई करते हैं,पक्की फर्श पर पोंछा लगाते हैं उसी प्रकार स्वच्छ दुग्ध उत्पादन हेतु दुग्धशाला को साफ सुथरा रखना चाहिए। दुग्धशाला ऐसी होनी चाहिए जिसमें स्वच्छ वायु तथा प्रकाश पहुँच सके जिससे गोबर या मूत्र की दुर्गन्ध न रहे। दूध दुहने के पहले दुग्धशाला से गोबर हटाकर सफ़ाई कर लेनी चाहिए। दुग्धशाला के फर्श को जीवाणुनाशक घोल से धोना चाहिए। दोहन के तुरन्त पूर्व दुग्धशाला में झाड़ू नहीं लगाना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से दुग्धशाला की वायु में धूल व गन्दगी के कण बिखर सकते हैं जो दूध में गिरकर दूध को संदूषित कर सकते हैं।

दूध दुहने का बर्तन- हम लोग दूध दुहने हेतु बर्तन में बाल्टी का प्रयोग करते हैं।परन्तु क्या है उचित हैं ?दूध दुहने के लिए ऐसी बाल्टी प्रयोग करना चाहिए जिसका मुँह एक किनारे हो तथा ऊपर का अधिकांश भाग बन्द हो। यह बाल्टी स्टेनलेस स्टील की बनी होनी चाहिए। दूध के बर्तन को पहले ठण्डे पानी से फिर जीवाणु नाशक घोल से धुलते हैं। धुलाई के पश्चात बाल्टी को किसी स्वच्छ स्थान पर आैंधे मुँह रखकर सुखाने के पश्चात दुहने हेतु प्रयोग में लाते हैं।

य) दूध दुहने वाला-चूँकि बहुत सी बीमरियों के जीवाणु दूध में पहुँचकर दूध पीने वाले को भी उन्हें बीमरियों से ग्रसित कर सकते हैं अत: दूध दुहने वाला व्यक्ति निरोगी एवं साफ -सुथरा होना चाहिए। दूध दुहने वाले के हाथ साफ , शरीर एवं कपड़े स्वच्छ तथा नाखून कटे होने चाहिए ।

र) दोहन विधि -दुहने का तरीका ऐसा हो कि कम से कम जीवाणु दूध में प्रवेश कर सकें। दुहते समय प्रारम्भ की दो तीन धारें बाहर गिरा दें। दुहने हेतु सूखी एवं पूर्ण हस्त विधि सर्वोत्तम मानी जाती हैं ।

ल) चारा पानी - पशुओं के चारे में सड़ी-गली चीजें तथा तेज गन्ध युक्त पदार्थ न मिलायें अन्यथा दूध में अवांछित गन्ध उत्पन्न हो जाती हैं। पशुओं के पीने एवं बर्तनों की धुलाई हेतु पानी स्वच्छ तथा शुद्ध होना चाहिए ।

ब) दूध रखने की विधि- दूध दुहने के पश्चात दूध को साफ कपड़े या छन्नी से छान लेना चाहिए।छानने के पश्चात यदि दूध को अधिक देर तक रखना है। तो उसे गर्म करके उबाल देना चाहिए। दूध उबालने के पश्चात उसे ठण्डा करके किसी ठण्डे स्थान पर बर्तन से ढककर रखना चाहिए ।

4) पशुओं की सामान्यबीमारियाँ

अ) बीमार पशु के लक्षण - जब हम बीमार होते हैं तो हमारी कार्य करने की क्षमता घट जाती है। शरीर सुस्त हो जाता है। किसी काम में हमारा मन नहीं लगता है। इसी प्रकार हमारे पालतू पशु भी बीमार होते हैं । पशु अपने रोग के बारे में स्वयं कुछ नहीं बता सकता है। अत: हमको पशुओं के प्रमुख रोग,उनके लक्षण एवं उपचार के बारे में जानना चाहिए -

* पशु का थूथन और मुँह,बीमारहोने पर, सूखे रहते हैं। जबकि स्वस्थ पशु का मुँह व थूथन नम रहता है।

* बीमार पशु चारा खाना धीरे-धीरे बन्द कर देता है। बीमार पशु के कान ढीले होकर लटक जाते हैं।

* बीमारी के समय पशु का गोबर अत्यधिक कड़ा या पतला हो जाता है। ।

पशुओं में होने वाली कुछ प्रमुख बीमारियाँ एवं उनके लक्षण तथा उपचार निम्नवत् हैं-

i) मुँहपका, खुरपका - इस बीमारी में पशु के मुँह और खुर पक जाते हैं ।यह बीमारी एक विषाणु के कारण फैलती है। मुँह पक जाने के कारण पशु चारा - दाना नहीं खा पाता है। जिससे वह अत्यन्त कमजोर हो जाता है। इस बीमारी से पशु की मृत्यु सामान्यत: नहीं होती है। परन्तु दुग्ध उत्पादन काफी कम हो जाता है।

लक्षण -

* इस बीमारी में पशु को बुखार हो जाता है।

* बीमार पशु के थन, मुँह व खुरों पर छाले पड़कर फूटते हैं जिससे घाव बन जाता है।

* मुँह में छालों के कारण पशु के मुँह से लार टपकती है।

* खुर के पक एवं बढ़ जाने के कारण पशु लगंड़ाने लगता है।

* बीमार पशु चारा खाना बन्द कर देता है। तथा दुग्ध उत्पादन कम हो जाता है।

उपचार -

* स्वस्थ पशु को बीमारी नही इसके लिए पशुओं को टीका लगवाना चाहिए ।

* बीमार पशु को तुरन्त स्वस्थ पशुओं से अलग कर देना चाहिए ।

* रोगी पशु का मुँह पका होता है। इस कारण से उसे नर्म और पाचक आहार जैसे- बरसीम,लोबिया,चोकर, चावल का माड़ व अन्य हरी मुलायम घास खिलानी चाहिए ।

* बीमार पशु के छालों को फिटकरी या पोटैशियम परमैगनेट के घोल से दिन में 2,3 बार धोना चाहिए ।

* रोगी पश के खुर के छालों को तूतिया के घोल और फ़िनाइल से धोना लाभदायक होता है।

ii) **अफ़रा**- क्या आपने पेट में गैस होने पर किसी व्यक्ति को बेचैन होते हुए देखा है ?पशुओं के आमाशाय (रुमेंन) में हरे चारे अथवा अनाज के सड़ने से पशु को सांस लेने में कष्ट होता है। यदि आपके पशु को निम्नालिखित लक्षण है। तो उसको अफ़रा बीमारी हो गयी है।

लक्षण-

*इस बीमारी में पशु का पेट गैस भरने के कारण फूल जाता है। फूले पेट को थपथपाने पर ढोल की तरह ढब-ढब की आवाज आती है।

*पेट में गैस होने पर फेफ़ड़ो पर दबाव पड़ता है। पशु सांस नहीं ले पाता है,जिससे वह बेचैन होकर कराहने तथा जीभ बाहर निकालकर हाँफने लगता है।

*ज्यादा बीमार होने पर पशु का मूत्र रुक जाता है। इस बीमारी में पशु का तुरन्त उपचार करना चाहिए ।

*शीघ्र उपचार न होने पर पशु प्राय: मर जाता है।

उपचार- अफ़रा की प्राथमिक चिकित्सा निम्न तरीके से करना चाहिए -

* एक दो दिन के लिए बरसीम अथवा हरा चारा न खिलायें ।

*एक लीटर तीसी के तेल में 50 ग्राम हर्र व 100 ग्राम काला नमक मिलाकर दो खुराक बनायें तथा प्रत्येक खुराक छ: घंटे के अन्तर पर पिलायें।

* बीमार पशु की चिकित्सा हेतु पशु चिकित्सक की सहायता लेना श्रेयस्कर है।

iii)पेचिश (खूनी दस्त)- पेचिश एक सामान्य रोग है। । पेचिश पशुओं को सड़ा गला या बासी और दूषित चारा खाने या दूषित पानी पीने से होती है। अधिक गर्मी या सर्दी लगने से भी कभी-कभी पशुओं को पेचिश हो जाती है। ।

लक्षण -

*पेचिश में पशु लाल आँव मिला गोबर करता है।

*पशु के पेट में दर्द रहता है।

*पेचिश से ग्रस्त पशु की पुतली पीली पड़ जाती है।

*गोबर के साथ बिना पचा हुआ चारा भी निकलता है।

उपचार -

1) 500 मिली अरंडी का तेल एक बार में पिलाकर पेट की सिकाई करने से पेचिश में लाभ प्राप्त होता है।

2) पेचिश होने पर अपने पशु की चिकित्सा हेतु पशु चिकित्सक से सम्पर्क करना चाहिए ।

पशु परजीवी- हमारे पशुओं को परजीवी कीड़े भी बहुत हानि पहुंचाते हैं। परजीवी कीड़े पशुओं का खून चूस लेते हैं। ये कई बीमरियों के फैलने का कारण भी बनते हैं।

परजीवी कीड़े सामन्यत: दो प्रकार के होते हैं -

अ)बाह्य परजीवी ब)आन्तरिक परजीवी

(अ) बाह्य परजीवी - बाह्य परजीवी पशु शरीर के बाहरी भाग पर चिपककर अपना भोजन प्राप्त करते हैं जैसे- जूँ,चिल्लर, किलनी तथा जोंक ।

1)जूँ,चिल्लर,किलनी- जिस प्रकार गन्दगी रहने के कारण हमारे बालों और कपड़ों में जूँ और चिल्लर पड़ जाते हैं उसी प्रकार ठीक ढंग से सफ़ाई आदि न होने से पशुओं को भी चिल्लर,जूँ ,किलनी आदि पड़ जाते हैं। इन परजीवी जन्तुआें से ग्रसित होने पर पशु अपना शरीर इधर-उधर रगड़ता रहता है।

यदि पशु शरीर में जूँ,चिल्लर, किलनी आदि की संख्या अधिक हो जाती है। तो वह बेचैन रहने लगता है और ऐसा पशु धीरे - धीरे कमजोर हो जाता है।

उपचार- बाह्य परजीवी से बचाव हेतु पशुओं के शरीर को ब्यूटाक्स दवा की 5 मिली. मात्रा एक लीटर पानी में मिलाकर बने मिश्रण से धुलते हैं साथ ही कोफेक्यू दवा की दो गोली प्रति पशु प्रतिदिन के हिसाब से खिलाते हैं।पशुओं का उपचार पशु चिकित्सक के परामर्श के अनुसार ही करें।

2) जोंक - जब हम किसी गन्दे पानी के तालाब या गड्ढे में देर तक रहते हैं तो अक्सर हमारे पैरों में एक जन्तु चिपक जाता है।खून चूस लेने के बाद अक्सर यह अपने आप छोड़ देता

है। बारीक पिसा नमक डाल देने से इसके शरीर से खून निकलने लगता है और यह मर जाता है। क्या आपको इस जन्तु का नाम पता है ? यह परजीवी जोंक के नाम से जाना जाता है। यही जोंक हमारे पशुओं के मुँह,थूथन या अन्य कोमल अंगों पर चिपटकर उनका खून चूस लेता है। कभी-कभी जोंक बहुत देर तक या कई दिनों तक पशु के शरीर पर उनका खून चूसते रहते हैं।

(ब)आन्तरिक परजीवी- ये परजीवी पशु शरीर के भीतरी भागों,आहार नाल,यकृत,खून आदि में रहकर अपना भोजन प्राप्त करते हैं,जैसे केचुआ (राउन्ड वर्म तथा हुकवर्म) इत्यदि।

पेट का केचुआ- केचुआ हमारे पेट में पाया जाता है। ।जब हम बिना धुले फल और सब्जियां खाते हैं तो केचुए का अण्डा हमारे पेट में चला जाता है। पशुओं में भी केचुए का अण्डा गन्दे चारे तथा संदूषित पानी के साथ आहारनाल में चला जाता है। पशुओं के पेट में विकसित होकर केचुआ छोटी आंत में अपना घर बना लेता है। केचुए से हमारे पशुओं के छोटे बच्चे अधिक प्रभावित होते हैं। बछड़ों का पेट निकल आता है। बछड़े सुस्त एवं कमजोर हो जाते हैं। कभी-कभी पतले दस्त तथा मरोड़ होने लगती है।पशु चारा खाना कम कर देता है। अन्त में उसकी मृत्यु भी हो सकती है।

उपचार - पेट के केचुए से बचाव हेतु प्रौढ़ पशुओं को वर्ष में दो बार मार्च तथा नवम्बर माह में कृमिहर दवायें पिलायी जाती हैं। बच्चे (बछड़ा,बछिया)में प्रथम बार कृमिहर दवाआें का प्रयोग 25 दिन की आयु में किया जाता है। प्रचलित कृमिहर दवाआें में पिपराजीन, नीलवार्म फोर्ट, बेनमिन्थ, निलजान तथा टोलजान दवायें प्रमुख है जिसे पशु चिकित्सक के परामर्श से देना चाहिए ।

भोजन में दूध का महत्व

हम सभी अपने भोजन में क्या खाते हैं ? चावल, दाल, विभिन्न प्रकार कीसब्जियाँ, रोटी, मांस, मछली, अंडा, घी, दूध आदि। नवजात शिशु भोजन कैसे ग्रहण करता है ? क्या केवल दूध का सेवन करके भी मनुष्य स्वस्थ्य रह सकता है? हमारे शरीर के पोषण एवं वृद्धि के

लिए मुख्यत: प्रोटीन, वसा, शर्करा , लवण, विटामिन तथा जल की आवश्यकता होती है।ये सभी पदार्थ दूध में उपयुक्त मात्रा में उपलब्ध हैं । अत: दूध हमारे लिए पूर्ण आहार है।

विभिन्न प्रकार के दूध में पोषक तत्वों की प्रतिशत मात्रा

विभिन्न प्रकार के दूध में पोषक तत्वों की प्रतिशत मात्रा

क्रमांक	दूध की किस्म	पानी %	वसा %	प्रोटीन %	दुग्ध शर्करा %	खनिज लवण %
1.	गाय का दूध	86.26	4.50	3.45	4.88	0.71
2.	भैंस का दूध	82.25	7.51	5.05	4.44	0.75
3.	बकरी का दूध	85.71	4.00	4.29	4.46	0.76
4.	माँ का दूध	87.41	3.78	2.29	6.21	0.31

दूध में उपस्थित वसा तथा शर्करा हमारे शरीर को शक्ति तथा ऊर्जा प्रदान करती है।शरीर की वृद्धि हेतु प्रोटीन काम आती है। देश में शाकाहारी लोगों हेतु पशु प्रोटीन का एक मात्र स्रोत दूध ही है।

स्वच्छ दुग्ध उत्पादन

कभी-कभी दूध क्यों फट जाता है? जब जीवाणु किसी प्रकार दूध में पहुँच जाते हैं तो वे बड़ी तेजी से बढ़ते हैं और सारे दूध को दूषित कर देते हैं। दूध जीवाणुआें की वृद्धि के लिये सर्वोत्तम माध्यम है।इन्हीं जीवाणुआें की वृद्धि के कारण दूध में अम्लता बढ़ जाती है और दूध फट जाता है।

स्वच्छ दूध के गुण

अ) जिस दूध में धूल व गन्दगी न हो ।

ब) जीवाणुआें की न्यूनतम संख्या हो ।

स) अवांछनीय गन्ध न हो ।

द) अधिक समय तक सुरक्षित रखा जा सके ।

स्वच्छ दूध का तात्पर्य उस दूध से है, जो स्वस्थ पशु से स्वस्थ वातावरण में प्राप्त हो और जिसमें जीवाणुआें की संख्या न्यूनतम हो।

संदूषित दूध से फैलने वाली बीमारियाँ- संदूषित दूध के सेवन (उपयोग) से हम विभिन्न प्रकार के रोगों से ग्रस्त हो जाते हैं। संदूषित दूध से टी.बी.(क्षय रोग)एन्थ्रैक्स, टायफ़ायड, पेचिश, दस्त, कालरा तथा डिप्थीरिया जैसी बीमारियाँ हो सकती हैं। अत: इन बीमरियों से बचाव हेतु हमें स्वच्छ दूध ग्रहण करना चाहिए ।

पशुओं की उन्नत नस्लें

गाय पालन- भारत में गाय की लगभग 20 उन्नतशील नस्लें पायी जाती हैं ।हम इन नस्लों को उनकी उपयोगिता के आधार पर तीन वर्गो में बांट सकते हैं ।

1)**दुधारु गाय की नस्लें** - इस वर्ग के अन्तर्गत आने वाली नस्ल के गायों की दुग्ध उत्पादन क्षमता अधिक होती है।परन्तु बछड़े कृषि कार्य एवं बोझा ढोने हेतु उपयुक्त नहींहोते हैं ।इस वर्ग में साहीवाल,सिन्धी,जर्सी तथा फ्रिजियन नस्लें प्रमुख हैं।

2)**द्विकाजी गाय की नस्लें** - इस वर्ग के नस्ल की गायें दूध अधिक देती हैं साथ ही साथ इनके बछड़े कृषि कार्य एवं बोझ ढोने में उपयोगी होते हैं। इसमें हरियाणा,थारपारकर,गंगातीरी प्रमुख हैं ।

3)**भारवाही गाय की नस्लें** - वे नस्लें जो दूध तो अधिक नहीं देती परन्तु इनके बछड़े कृषि कार्य और बोझा ढोने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त होते हैं । इस वर्ग में मुख्यत: खेरी गढ़, नागौरी, पंवार तथा अमृतमहल आदि प्रमुख हैं।

गाय की नस्लें-

गाय की नस्लें–

नस्लें	मूल स्थान	पहचान हेतु विशेषतायें	औसत वजन (किग्रा)
साहीवाल	मोंटगोमरी (पाकिस्तान)	भारी भरकम शरीर , छोटी टांगे,पतली एवं ढीली ढाली चमड़ी (खाल), चौड़ा माथा, छोटे और मोटे सींग, लालिमा लिए हुए भूरा रंग लम्बी पूछ तथा बड़े–बड़े थन औसतदुग्ध 1718 किग्रा0 /ब्यांत मँझोला आकार एवं गठीला	मादा – 408 नर – 544
सिन्धी	पाकिस्तान का सिंध तथा कराची क्षेत्र	शरीर मोटा, सींग लाल रंग, मध्यम आकार के लटकते हुए कान, बड़ा थन, बड़ा गल कम्बल तथा लम्बी काली पूँछ। औसत दूध उत्पादन 1606 किग्रा /ब्यांत	मादा – 320 नर – 454
हरियाणा	रोहतक, हिसार एवं करनाल (हरियाणा)	लम्बा सुव्यवस्थित एवं ठोस शरीर, छोटे सींग, रंग सफेद तथा हल्का धूसर, लम्बा पतला चेहरा, छोटे नुकीले और चौकन्ने कान, सुगठित थन औसत दुग्ध उत्पादन 1136 किग्रा0 /ब्यांत अच्छे बैलों के लिए प्रसिद्ध नस्ल।	मादा – 354 नर – 500
गंगातीरी	बलिया जिले का गंगा और घाघरा नदियों का दोआबा	नाक की ओर नुकीला, लम्बा सिर और चौड़ा ललाट, छोटी और मोटी गर्दन, मोटे सींग, चमकीली आँखे, पूर्ण विकसित थन, काली झब्बे युक्त टखनों तक लटकती पूँछ	मादा – 272 नर – 350
खेरीगढ़	खीरी जिले का खेरीगढ़ परगना	सफेद रंग, छोटा पतला चेहरा, चमकीली आँखे, छोटे – छोटे चौकन्ने कान, सफेद झब्बे युक्त लम्बी पूँछ, दुग्ध उत्पादन एक किग्रा प्रतिदिन।	मादा – 320 नर – 410
केनबरिया (केनकथा)	बाँदा जिले में केन नदी के तटवर्ती भागों में	शरीर छोटा, गठीला और गहरा, सीधी पीठ, छोटा चौड़ा सिर व छोटे –छोटे बलिष्ठ पैर, मध्य आकार का गलकम्बल, मजबूत नुकीले सींग व छोटे–छोटे नुकीले कान, पेट का रंग धूसर और शेष शरीर गहरा धूसर।	साँड़ – 350 गाय – 295
जर्सी	जर्सी द्वीप समूह (इंग्लैंड)	इस जाति का रंग हल्का लाल, सफेद धब्बे युक्त, शरीर विकसित एवं चुस्त होता है। सींग छोटे तथा अन्दर की ओर झुके हुए होते हैं। एक ब्याँत में 4600 लीटर दूध देती है। दो से ढाई साल में पहला बच्चा दे देती है। नथुने बड़े एवं सिर पीठ तथा कन्धा एक लाइन में होते हैं।	नर – 650 –675 मादा– 425 – 450
होल्स्टीन फ्रीजियन,	इस जाति का मूल नीदरलैण्ड में फ्रिजलैण्ड प्रान्त को माना जाता है।	इस गाय का रंग काला व श्वेत कम या अधिक अनुपात में होता है। शरीर भारी होता है, कूबड़ नहीं होता है, थूथन चौड़ा, नथुने खुले हुए एवं जबड़े मजबूत होते हैं। एक ब्याँत में अधिकतम 6500 लीटर दूध देती है। यह गाय दो साल की आयु में प्रथम बच्चा देती है।	

चित्र 4.2 साहीवाल गाय

चित्र 4.3 सिन्धी गाय

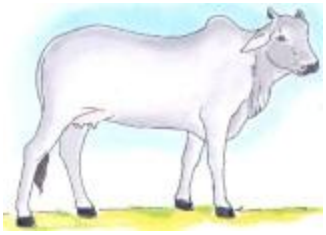

चित्र 4.4 हरियाणा गाय

चित्र 4.5 गंगातीरी साँड़

चित्र 4.6 खेरी गढ़ गाय

चित्र 4.7 कैनकथा गाय

चित्र 4.8 जर्सी गाय

चित्र 4.9 हैल्स्टीनफ्रिजियन गाय

भैंस पालन - देश में कुल जितना दूध पैदा होता है। उसका 55 प्रतिशत भाग भैंस से प्राप्त होता है। ।भैंस का औसत दुग्ध उत्पादन भारतीय गाय की तुलना में अधिक है तथा भैंस के दूध में वसा की मात्रा भी अधिक होती है। गाँवों में किसान गाय की तुलना में भैंस पालना अधिक पसन्द करते हैं ।भारत में भैंस की कुछ प्रमुख नस्लें पायी जाती है। जिसमें मुर्रा,भदावरी,सुरती,मेंहसाना तथा जाफरावादी आदि प्रमुख हैं ।

भैंस की नस्लें–

नस्ल	मूल स्थान	पहचान हेतु विशेषतायें	औसत वज़न (किग्रा)
मुर्रा	दिल्ली, हरियाणा, पंजाब	काला रंग, भारी गठीला शरीर, चक्करदार मुड़े हुए सींग, छोटा सिर और पतला गर्दन पूर्ण विकसित थन, छोटी, बलिष्ठ और लम्बी पूंछ, औसत दुग्ध उत्पादन 6 से 8 लीटर प्रतिदिन	मादा – 431 नर – 567
भदावरी	भदावरी क्षेत्र (आगरा)	छोटा सिर जो सींगों के मध्य में उभरा होता है। तांबे जैसा रंग, काले खुर, छोटा पैर, लम्बी सफेद पूँछ, चपटे ठोस सींग, चमकदार आँख मध्यम आकार के कान व पतली गर्दन, दूध में वसा की मात्रा सर्वाधिक औसत दुग्ध उत्पादन 1100 किग्रा प्रति ब्याँत।	मादा – 385 नर – 476
सुरती	आनन्द (बड़ौदा)	काला भूरा रंग, मध्यम आकार, हंसिये जैसी सींग, पूंछ, सफेद, झब्बे युक्त, औसत दुग्ध उत्पादन 1772 किग्रा प्रति ब्याँत	मादा – 408 नर – 499
मेंहसाना	गुजरात	मुर्रा नस्ल से भारी भरकम शरीर, हल्के पैर, लम्बा सिर, सींगे किनारों पर मुड़ी हुई, सुगठित थन, औसत दुग्ध उत्पादन 1744 किग्रा प्रति ब्याँत	मादा – 431 नर – 569
जाफरीबादी	काठियावाड़ क्षेत्र	लम्बा शरीर, काला रंग, सींगे गर्दन की तरफ मुड़ी हुई, पूर्ण विकसित थन, औसत दुग्ध उत्पादन 1362 किग्रा प्रति ब्याँत	मादा – 414 नर – 560

बकरी पालन - बकरी उपयोगी पशु है जिससे हमें दूध एवं मांस दोनों प्राप्त होते है। कुल दुग्ध उत्पादन में बकरी के दूध का हिस्सा सिर्फ 3% है, परन्तु गुणवत्ता के दृष्टिकोण से

बकरी का दूध सर्वोत्तम होता है। बकरी एक ऐसा पालतू पशु है जिसे कम से कम खर्च में पालकर लाभ कमाया जा सकता है। इसी कारण राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने बकरी को निर्धन (गरीब) की गाय कहा ।

भारत में बकरियों की कई नस्लें पायी जाती हैं परन्तु उत्तर प्रदेश में पायी जाने वाली प्रमुख नस्ले हैं, जमुना पारी, बरबरी तथा ब्लैक बंगाल आदि ।

बकरियों की नस्लें–

नस्ल	मूल स्थान	पहचान हेतु विशेषतायें	औसत वजन (किग्रा)
यमुनापारी	यमुना, गंगा और चम्बल नदी के तटवर्ती क्षेत्र	माथा चौड़ा एवं उभरा, बकरों में दाढ़ी पायी जाती है। कान 25–30 सेमी0 लम्बे एवं लटके हुए शरीर पर काले व भूरे धब्बे । शरीर की उपेक्षा पिछली टाँगों पर घने लम्बे बाल।	दूध एवं माँस हेतु। मादा – 50 किग्रा0 वनज नर – 75 किग्रा वजन
बरबरी	दिल्ली, हरियाणा एटा, आगरा	नाटा कद, कान छोटा, अधिकांशतः सफेद व भूरी, शरीर की अपेक्षा पैर छोटे, इन्हें घर में बांधकर भी पाला जा सकता है। पूर्ण विकसित थन, औसत दुग्ध उत्पादन एक किग्रा प्रति दिन	माँस हेतु सर्वाधिक प्रचलित मादा –32 किग्रा नर – 41 किग्रा
ब्लैक बंगाल	पश्चिम बंगाल	छोटे पैर वाली, सर्वोत्तम माँस, जुड़वाँ बच्चे देने वाली, चौड़ा सीना, कान उठे हुए, मुलायम बाल, काला रंग, परिपक्व होने पर औसत वनज 26 किग्रा	माँसहेतु उपयोगी

सुअर पालन - पहले सुअर पालन एक विशेष जति द्वारा ही अवैज्ञानिक ढंग से किया जाता था । अब इस व्यवसाय के लाभ को देखते हुए बहुत से लोग सुअर पालन की ओर आकृष्ट होने लगे हैं। सुअर, मांस-उत्पादन हेतु पाला जाता है। आधुनिक सुअर पालन व्यवसाय में सुअर की विदेशी नस्लें यथा लार्ज व्हाइट योर्कशायर तथा लैन्ड्रेस मुख्यत: प्रचलन में हैं ।

सुअर की नस्लें –

नस्ल	शरीर बनावट	औसत वजन (किग्रा)
लार्ज ह्वाइट यॉर्कशायर(इंग्लैंड की नस्ल)	लम्बा सिर, चौड़ी थूथन, लम्बे पतले आगे की ओर छोटे धब्बे हो सकते हैं, बिना झुर्री के पतली चमड़ी तथा उच्च प्रजनन क्षमता	नर – 300 – 400 मादा – 230 – 320
लैन्ड्रेस, डेनमार्क की नस्ल	लम्बा थूथन, लटके कान, मझोला आकार, छोटी टाँगें, सफेद रंग काले धब्बे युक्त	नर – 300 – 350 मादा – 200 – 250

मुर्गी पालन- विगत कई वर्षो से मुर्गी पालन एक लाभप्रद व्यवसाय के रूप में फल -फूल रहा है।मुर्गियों से हमें अण्डा एवं मांस प्राप्त होता है। मुर्गियों की प्रमुख नस्लों में प्लाईमाउथ राक, बह्मा,लेगहार्न तथा मिनोरका है।

मुर्गीयों की प्रमुख नस्लें –

	औसत वजन (किग्रा)		कलगी का प्रकार	चमड़ी का रंग	टखने का रंग	अण्डे का रंग
	मुर्गा	मुर्गी				
...थ राक	4.2	3.4	एकल	पीला	पीला	भूरा
	5.0	4.0	मटर की पत्ती जैसी आकृति	पीला	पीला टखने पर छोटे–छोटे पंख पीला	भूरा
	2.7	2.0	एकल / बहुखण्डित	पीला	गहरा स्लेटी रंग	सफेद
	3.8	3.4	एकल / बहुखण्डित	सफेद		सफेद

अभ्यास के प्रश्न

1) सही विकल्प के सामने (√) का चिन्ह लगाइये ।

i) गरीब की गाय कहलाती है। -

क) गाय ख) भैंस

ग) भेड़ घ) बकरी

ii) संदूषित दूध से फैलने वाली बीमारी है। -

क) एड्स ख) कैंसर

ग) टी0 वी0 घ) पोलियो

iii) गाय की नस्ल नहीं है। -

क) गंगातीरी ख) मिनोरका

ग) नागौरी घ) भदावरी

iv) सिन्धी गाय है। -

क) दुधारू गाय की नस्ल ख) दुकाजी गाय की नस्ल

ग) भारवाही गाय की नस्ल घ) भैंस की नस्ल

v) स्वच्छ दूध में होना चाहिए -

क) न्यूनतम जीवाणु ख) अवांछनीय गन्ध

ग) अधिक वसा घ) कम पानी

vi) सबसे मीठा दूध होता है। -

क) गाय का दूध ख) भैंस का दूध

ग) बकरी का दूध घ) माँ का दूध

2)निम्नालिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए ।

क) पुआल और भूसा.....सूखा चारा है।

ख) .....प्रजनन की आधार शिला है।

ग) केचुए को प्रकृति का .....कहते हैं।

घ) मुँहपका खुरपका बीमारी.....से फैलती है।

ङ) जोंक एक.....परजीवी जन्तु है।

च) दूध में मिठास.....के कारण होती है।

छ) अमृतमहल.....गाय की नस्ल है।

ज) दूध एक.....आहार है। ।

3) निम्नालिखित कथनों में सही पर (√) तथा गलत पर (x) का निशान लगाइये ।

क)गाय के दूध का पीला रंग कैरोटीन के कारण होता है।( )

ख)वरण का तात्पर्य आनिच्छित पशुओं को अलग करना है। ( )

ग)भ्रूण प्रत्यारोपण तकनीक से एक वर्ष में एक ही गाय के 10-12 बच्चे प्राप्त किये जा सकते हैं ।( )

घ)मक्का दलहनी चारा है।( )

ङ)पूर्ण हस्त दोहन, दूध दोहन की सर्वोत्तम विधि है। ( )

च)पशु के थूथन व मुँह का नम रहना उसके बीमार रहने का लक्षण है। ( )

छ)देश में कुल दुग्ध उत्पादन का 55% हिस्सा गाय से प्राप्त होता है।( )

4)दूध क्यों फटता है। ?

5)यदि आपकी भैंस प्रतिदिन 10 लीटर दूध देती है। तो उसे आप जीवन निर्वाह एवं दुग्ध उत्पादन हेतु कुल कितने किग्रा दाना प्रतिदिन खिलायेंगे ?

6)आपकी गाय अफ़रा रोग से ग्रसित है, तो आप क्या करेंगे ?

7)यदि बछड़े के मल (गोबर) में गोल कृमि (पेट का केचुआ) है। तो इससे बचने हेतु क्या उपाय करेंगे ?

8)किन्हीं दो नस्लों के गाय के चित्र बनाइए और उनमें दो अन्तर बताइये।

9)स्तम्भ `क' एवं स्तम्भ `ख' में दिए गये तथ्यों का सही-सही मिलान कीजिए-

स्तम्भ `क'	**स्तम्भ `ख'**
मुँहपका-खुरपका	पेट मे गैस हो जाना
जुकाम या बुखार	विषाणु
अफ़रा	सड़ा-गला दूषित चारा या पानी
पेचिस (खूनी दस्त)	ठण्ड लगना

10) पशुधन विकास क्यों आवश्यक है। ? पशुधन विकास की विधियाँ लिखिए ।

11) आहार किसे कहते हैं ? आहार कितने प्रकार का होता है। उत्पादन आहार के बारे में लिखिए ।

12) स्वच्छ दूध किसे कहते है। ? दूध में संदूषण के स्रोतों का उल्लेख कीजिए ।

13) बीमार पशु के लक्षण लिखिए तथा किसी एक बीमारी का वर्णन कीजिए ।

14)

ज	ना	पं	चा	र	गं
साँ	गौ	सिं	धी	ह	गा
खे	री	ग	ढ़	रि	ती
के	न	ब	रि	या	री
प्री	ति	य	न	गा	
धा	र	पा	र	क	र